कारीकोट गाँव को ICRT पुरस्कार 2025 मिला

चर्चा में क्यों?

उत्तर प्रदेश के बहराइच ज़िले में स्थित कारीकोट गाँव को प्रतिष्ठित **भारतीय उपमहाद्वीपीय** उत्तरदायी पर्यटन **(ICRT) पुरस्कार 2025** के लिये चुना गया है।

- यह पुरस्कार **ICRT इंडिया फाउंडेशन** द्वारा प्रदान किया जाता है और पर्यटन मंत्रालय द्वारा समर्थित है।

मुख्य बिंदु

- **ICRT पुरस्कार 2025**:
  - यह पुरस्कार **सतत् पर्यटन** में अग्रणी लोगों को सम्मानित करता है। इसका उद्देश्य नकारात्मक प्रभावों को घटाना और सकारात्मक प्रभावों को बढ़ाना है।
  - यह पुरस्कार 13 सितंबर वर्ष 2025 को नई दिल्ली में प्रदान किया जाएगा।
- **श्रेणियाँ**:
  - पुरस्कार समारोह में विभिन्न श्रेणियों जैसे **वन टू वॉच, सिल्वर और गोल्ड** के अंतर्गत संस्थानों को सम्मानित किया जाएगा।
- **मानदंड**:
  - पैनल ने प्रामाणिकता, प्रतिकृति, सामुदायिक भागीदारी और दीर्घकालिक प्रभाव के आधार पर प्रविष्टियों का मूल्यांकन किया है।
  - इस प्रक्रिया में कारीकोट अपनी नवोन्मेषी और समुदाय-आधारित ग्रामीण पर्यटन दृष्टि के कारण विशेष रूप से उभरकर सामने आया, जो **स्थायित्व** तथा **प्रभाव** का उत्कृष्ट उदाहरण है।
- **कारीकोट गाँव मॉडल**:
  - भारत-नेपाल सीमा और कतर्नियाघाट वन्यजीव अभयारण्य के निकट स्थित कारीकोट में पर्यटन पहल मुख्य रूप से थारू जनजातीय समुदाय द्वारा संचालित है। इसमें **होमस्टे, इको-टूरिज़्म और सांस्कृतिक अनुभवों** पर विशेष ज़ोर दिया जाता है।
  - इन पहलों ने पारंपरिक थारू शिल्प, व्यंजन और लोककलाओं को पुनर्जीवित करने में मदद की है, जिससे कारीकोट थारू विरासत का एक **जीवंत संग्रहालय** के रूप में उभरा है।
  - कारीकोट का समुदाय-आधारित और सतत् पर्यटन मॉडल विशेषकर **महिलाओं** तथा **युवाओं** के लिये नए रोज़गार के अवसर एवं दीर्घकालिक लाभ प्रदान करता है।
- **उत्तर प्रदेश की ग्रामीण पर्यटन रणनीति**:
  - कारीकोट को मिली यह मान्यता राज्य के **ग्रामीण पर्यटन** को विकास का प्रमुख केंद्र बनाने के प्रयास को रेखांकित करती है, जिसे उत्तर प्रदेश **बेड एंड ब्रेकफास्ट एवं होमस्टे नीति 2025** और **इको-पर्यटन प्रोत्साहन** जैसी पहलों का समर्थन प्राप्त है।

थारू जनजाति

- **थारू का शाब्दिक अर्थ:** ऐसा माना जाता है कि 'थारू' शब्द की उत्पत्ति **'स्थविर' (Sthavir)** से हुई है जिसका अर्थ होता है बौद्ध धर्म की थेरवाद शाखा/परंपरा को मानने वाला।
- **निवास स्थान:** थारू समुदाय शिवालिक या निम्न हिमालय की पर्वत शृंखला के बीच तराई क्षेत्र से संबंधित है।
  - तराई उत्तरी भारत और नेपाल के बीच हिमालय की निचली श्रेणियों के सामानांतर स्थित क्षेत्र है।
  - थारू समुदाय के लोग भारत और नेपाल दोनों देशों में पाए जाते हैं, भारतीय तराई क्षेत्र में ये अधिकांशतः उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश और बिहार में रहते हैं।
- **अनुसूचित जनजाति:** थारू समुदाय को उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश और बिहार राज्यों में एक अनुसूचित जनजाति के रूप में चिह्नित किया गया है।
- **आजीविका:** इस समुदाय के अधिकांश लोग अपनी आजीविका के लिये वनों पर आश्रित रहते हैं, हालाँकि समुदाय के कुछ लोग कृषि भी करते हैं।
- **भाषा:** इस समुदाय के लोग **थारू भाषा** (हिंद-आर्य उपसमूह की एक भाषा) की अलग-अलग बोलियाँ और हिंदी, उर्दू तथा अवधी भाषा के विभिन्न रूपों का प्रयोग बोलचाल के लिये करते हैं।

ICRT इंडिया फाउंडेशन

- ICRT इंडिया फाउंडेशन की स्थापना वर्ष 2017 में भारत में **उत्तरदायी पर्यटन** को समर्थन और विस्तार देने के लिये की गई थी।
- यह **केप टाउन उत्तरदायी पर्यटन घोषणा-पत्र 2002** का समर्थन करता है और इसके सिद्धांतों को बढ़ावा देता है।
- फाउंडेशन ने मैग्नाकार्टा द्वीप पर हस्ताक्षरित **उत्तरदायी पर्यटन चार्टर 2022** पर हस्ताक्षर किये और उसका समर्थन करता है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/karikot-village-wins-icrt-award-2025